

डॉ. डोनाल्ड फाउलर, पुराने नियम की पृष्ठभूमि, व्याख्यान 17, प्राचीन निकट पूर्व में राजत्व

© 2024 डॉन फाउलर और टेड हिल्डेब्रांट

यह पुराने नियम की पृष्ठभूमि पर अपने शिक्षण में डॉ. डॉन फाउलर हैं। यह सत्र 17 है, प्राचीन निकट पूर्व में राजत्व।

अच्छा, पुनः स्वागत है। हम राजसत्ता पर अपने विचार जारी रख रहे हैं। ग़लत समझा जाना आसान है। मैं जानता हूँ कि मेरा मतलब अच्छा है और मैं जानता हूँ कि मेरी शादी को 48 साल हो गए हैं।

मुझे लगता है कि मैं संवाद कर रहा हूँ, लेकिन मुझे पता चला कि मैं संवाद नहीं कर रहा हूँ। तो, यह पूरी तरह से प्रशंसनीय है कि हम जो करने की कोशिश कर रहे हैं वह आपको वास्तव में समझ में नहीं आ रहा है। लेकिन हम जो करने का प्रयास कर रहे हैं वह यह स्पष्ट करना है कि राजत्व ईश्वर की अखंडता से जुड़ा एक विषय क्षेत्र है क्योंकि ईश्वर ने इसे आशीर्वाद के रूप में वादा किया था।

और दूसरी बात, राजत्व वह साधन है जिसके द्वारा परमेश्वर ने कार्य करना चुना है, लेकिन वह समय आएगा जब अब्राहम से किए गए वादे लागू नहीं किए जाएंगे क्योंकि वे निर्वासन में होंगे। और निर्वासन में, उनके पास न तो भूमि है और न ही कोई राजा। हो सकता है कि वे निर्वासित राष्ट्रों के लिए एक आशीर्वाद हों, लेकिन राजत्व एक सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा है।

यदि वे पेशेवर होते और वे टेप देख रहे होते और वे मुझे सुन रहे होते, तो मुझे यकीन है कि कुछ लोग आश्चर्यचकित हो जाते क्योंकि वे, ठीक है, मैं वाल्टर ब्रूगेमैन के काम का बहुत बड़ा प्रशंसक हूँ। ब्रूगेमैन का मानना है कि किसी व्यक्ति में शक्ति को केंद्रीकृत करना हमेशा एक बुरी बात है। वह इसे ऐसे प्रस्तुत करता है जैसे कि राजसत्ता के बारे में जो कुछ भी कहा जाता है वह प्रचार है।

खैर, उनकी बात अच्छी तरह से समझी गई है। यदि आप मुझे एक मिनट के लिए आराम से बैठने की अनुमति दें, तो हम यात्रा कर सकते हैं। यदि आप चाहें तो आप मुझे रोक सकते हैं और एक कप कॉफी ले सकते हैं। लेकिन जब हम वापस शुरू करते हैं, तो मैं यह बता दूँ कि यह एक अच्छी तरह से लिया गया मुद्दा है।

प्राचीन निकट पूर्वी परिप्रेक्ष्य में, वस्तुतः सारा साहित्य राजा की ओर से लिखा जाता था। यह देवताओं को यह समझाने के लिए प्रचारित किया गया था कि राजा एक अच्छा राजा था।

लेकिन मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि राजत्व के बारे में बाइबल का दृष्टिकोण बिल्कुल अलग है। बाइबिल के पाठ में शुद्ध प्रचार नहीं है। यहां तक कि इसके महानतम शाही नायक भी दुखद रूप से त्रुटिपूर्ण हैं।

परमेश्वर बाइबल में राजत्व को प्रचार के रूप में प्रस्तुत नहीं करता है। भगवान यह दिखाने की कोशिश करते हैं कि कोई भी राजा जो ईश्वर के प्रस्तावों के अनुसार ईश्वर से संबंधित नहीं है, वह राजा है जिसका न्याय किया जाएगा। इस्राएल के सभी राजा असफल हैं।

यहाँ तक कि महान दाऊद को भी नकलची, झूठा, हत्यारा और व्यभिचारी के रूप में चित्रित किया गया है। यह प्रचार जैसा नहीं लगता। इसलिए, मैं आपके सामने जो प्रस्ताव रखूंगा वह यह है कि राजत्व एक तरह से केंद्रीय है, यह इस बात का एक केंद्रीय गुण है कि भगवान अपनी योजना और अपनी कथा को कैसे प्रकट करते हैं।

लेकिन यह अन्य सभी राष्ट्रों की तरह राजत्व नहीं है। वास्तव में, यदि हम एक राजत्व मॉडल चाहते हैं, तो वास्तविक राजत्व मॉडल, और यह मेरा निर्णय है; मैं पहले भी गलत रहा हूँ; मुझे लगता है कि असली राजत्व मॉडल वास्तव में डेविड नहीं है, भले ही डेविड में निश्चित रूप से महान गुण थे। असली राजत्व मॉडल मूसा है।

अब जब आप मुझे क्लास नोट्स का उपयोग करते हुए देख रहे हैं, तो वे आपके लिए उपलब्ध हैं। मैं आपको कुछ जानकारी दिखाने जा रहा हूँ जो मेरे द्वारा पढ़ाए जाने वाली कक्षा के लिए मेरे अन्य कक्षा नोट्स में से एक से आती है। मैं इस पर ध्यान से नहीं जा रहा हूँ क्योंकि मैं खुद को ऐसा करने नहीं दे सकता और सामग्री को पढ़ नहीं सकता।

लेकिन मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि राजत्व की भविष्यवाणी कैसे की जाती है। मैं उत्पत्ति में कुछ अंशों को देखने जा रहा हूँ ताकि मैं चाहता हूँ कि आप इसे पढ़ें क्योंकि मानक दृष्टिकोण यह है कि आप 1 शमूएल 8 पर आएँ, इस्राएली कहते हैं, हमें एक राजा दो। ओह, वे दुष्ट इस्राएली, वे एक राजा चाहते हैं। वे भगवान को अस्वीकार कर रहे हैं।

खैर, निःसंदेह वे परमेश्वर को अस्वीकार कर रहे थे, लेकिन यह राजत्व की गलती नहीं है। यह उनकी गलती है। तो, मैं आपको जो प्रस्ताव दे रहा हूँ वह यह है कि राजत्व एक केंद्रीय थीसिस है ताकि आप शाऊल से पहले राजत्व देख सकें।

और इसलिए, मैंने आपको बताया, नंबर एक, विद्वान समान रूप से सहमत हैं कि उत्पत्ति 1 और 2 में, एडम और ईव को शाही या अर्ध-सामान्य शब्दों में चित्रित किया गया है। दूसरे, उत्पत्ति 14 में सलेम में मलिकिसिदक की महत्वपूर्ण कहानी पर ध्यान दें क्योंकि सलेम, निश्चित रूप से, शायद यरूशलेम नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि इसका उद्देश्य यरूशलेम से संबंध रखना था, और वहाँ आपके पास मलिकिसिदक है, जिसे आप सभी शायद जानते हैं इब्रानियों की पत्रियों में मसीह के एक प्रकार के रूप में उपयोग किया जाता है। मलिकिसिदक एक ऐसा नाम है जिसका या तो अर्थ है, मेरा राजा धर्मी है या सेडेक का राजा, लेकिन ध्यान दें कि वह उत्पत्ति कथा में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है, और वह स्पष्ट रूप से एक राजा है।

इब्राहीम उसके साथ इस तरह से संबंध रखता है जिससे हम सभी को लगता है कि इसका राजत्व से कुछ लेना-देना है। और यदि कहानी अध्याय 14 में घटित होती है, तो याद रखें कि यह अध्याय 17 में है कि परमेश्वर इब्राहीम से उन राजाओं के बारे में वादा करता है जो उसके वंशज होंगे। इसलिए अध्याय 17.6 में, परमेश्वर वादा करता है कि राजा इब्राहीम के वंश से आएंगे।

और फिर, कुछ छंद जो बिल्कुल प्रसिद्ध छंद नहीं हैं, मैं आपका ध्यान न्यायाधीशों की ओर आकर्षित करता हूं, मुझे खेद है, उत्पत्ति की ओर; यदि आप मेरे साथ अध्याय 35 में पढ़ेंगे, जैसे परमेश्वर ने इब्राहीम से राजत्व के बारे में वादे किए थे, उसने याकूब से राजत्व के बारे में वही वादे दोहराए। तो, मेरे साथ उत्पत्ति अध्याय 35, श्लोक 11 पर ध्यान दें, आइए श्लोक 9 पढ़ें। तब परमेश्वर ने याकूब को फिर से दर्शन दिया जब वह पढ़न अराम से आया था। क्या यह दिलचस्प नहीं है? निस्संदेह, पढ़न अराम उत्तरी मेसोपोटामिया में है।

और उसने उसे वैसे ही आशीर्वाद दिया जैसे परमेश्वर ने इब्राहीम को आशीर्वाद दिया था। और इस प्रकार पद 10 में परमेश्वर ने उस से कहा, तेरा नाम याकूब है। जैसे परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, तुम्हारा नाम इब्राहीम होगा।

फिर तू याकूब न कहलाएगा, तेरा नाम इस्राएल होगा। दूसरे शब्दों में, यह याकूब के व्यक्तित्व में अब्राहम की पुनरावृत्ति है। इसलिए, उसने उसे इज़राइल कहा, और फिर भगवान ने उससे कहा, मैं एल शादाई हूं, फूलो-फलो और गुणा करो, ठीक वही आदेश जो भगवान ने आदम और हव्वा को दिए थे।

तेरे वंश से एक जाति और अन्यजातियों का झुण्ड उत्पन्न होगा, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे। तो परमेश्वर इब्राहीम के वंशज, याकूब से जो वादा कर रहा था, वही वादा उसके लिए है जो परमेश्वर ने इब्राहीम को फूलने और बढ़ने के लिए दिया था। राजा तुझ से उत्पन्न होंगे।

आयत 12 में, जो भूमि मैं ने इब्राहीम और इसहाक को दी थी वह तुम्हें दे दूंगा। मैं तुम्हारे बाद तुम्हारे वंशजों को वह भूमि दूंगा। यह वस्तुतः उस बात का शब्दशः दोहराव है जो परमेश्वर ने मूल रूप से इब्राहीम से कहा था।

तो, और फिर अध्याय 49, श्लोक 10 में, उत्पत्ति 49:10 में यहूदा के गोत्र के लिए विशेष रूप से राजत्व की भविष्यवाणी की गई थी। वास्तव में, न्यायाधीशों की पुस्तक में, चाहे हम इसे पसंद करें या न करें, न्यायाधीशों के लेखक ने बार-बार यह बात कही है कि यह राजत्व की कमी थी जो उस समस्या का एक हिस्सा था जिसका इज़राइल सामना कर रहा था। इतना कहने के बाद, मैं नेता के सर्वोच्च उदाहरण के रूप में आपके लिए मूसा की एक त्वरित यात्रा करने जा रहा हूँ। और दोस्तों, यहाँ वह हिस्सा है जहाँ मेरे विचार जा रहे हैं।

अब और कुछ नहीं... ठीक है, मैं यह कहना चाहता हूँ। मुझे लगता है यह सच है। यदि यह सच नहीं है, तो मैं केवल थोड़ा सा ही भटकूंगा।

नए नियम के सुसमाचारों में मसीह की पहचान को प्रकट करने के लिए मूसा के उदाहरण से अधिक महत्वपूर्ण कोई व्यक्ति या वस्तु नहीं है। हममें से अधिकांश लोग जानते हैं कि यीशु नया मूसा है। वह नया मूसा है, मूसा से बेहतर, लेकिन वह नया मूसा है।

तो, इसमें, मैं इन पर बहुत जल्दी विचार करने जा रहा हूँ, क्योंकि हमारे पास ऐसा करने के लिए समय नहीं है। मूसा के पास पुराने नियम में किसी भी राजा की सबसे लंबी कॉल कथाओं में से एक है। वह दैवीय रूप से चुना गया है, और पाठ उस बिंदु को स्पष्ट करने के लिए आगे बढ़ता है।

दूसरे, निर्गमन 3-4 में, उसे दैवीय रूप से बुलाया गया है। यह राजत्व का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है, जिसे प्राचीन निकट पूर्व और बाइबल दोनों में दैवीय रूप से कहा गया है। प्राचीन निकट पूर्व में, मैं आपको यह नहीं बता सकता कि राजा कितनी बार अपने साहित्यिक उत्पादन का परिचय मुझे कहे जाने वाले महान देवताओं के साथ कराते थे।

मूसा को दैवीय रूप से बुलाया गया है। अध्याय 4 में हम पढ़ते हैं कि वह दैवीय रूप से सक्षम है। यह सब राजत्व सामग्री है।

मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए, लेकिन मैं खुद को रोक नहीं सकता. मेरे पहले तीन बिंदुओं को देखें. वह दैवीय रूप से चुना गया है.

शाऊल को दैवीय रूप से चुना गया है। वास्तव में, शाऊल को यह स्पष्ट करने के लिए कई बार चुना गया कि ईश्वर ने उसे दैवीय रूप से चुना है। दूसरे, कहानी बिल्कुल स्पष्ट है कि शाऊल को दैवीय रूप से बुलाया गया है।

उसे शमूएल के व्यक्तित्व के माध्यम से बुलाया जाता है, इसलिए उसे दैवीय रूप से बुलाया जाता है, और फिर वह दैवीय रूप से सक्षम होता है। पाठ इस तथ्य पर एक बड़ा मुद्दा उठाता है कि अध्याय 10 में, परमेश्वर उस आत्मा को लेता है जो शमूएल के साथ भविष्यवक्ताओं पर थी, और वह उसी आत्मा को लेता है और शाऊल पर डालता है, और शाऊल तब वास्तव में भविष्यवाणी करने में सक्षम होता है। यह पाठ इस तस्वीर को प्रस्तुत करने के लिए काफी लंबा और कठिन है कि शाऊल बिल्कुल आदर्श राजा है।

उसे आत्मा द्वारा चुना, बुलाया और सक्षम बनाया गया है। खैर, यही बात मूसा के बारे में भी सच है। मूसा आत्मा द्वारा सक्षम है.

संख्या 11 में महत्वपूर्ण अनुच्छेद पर ध्यान दें, जो मूसा की आत्मा पर प्रकाश डालता है, साथ ही व्यवस्थाविवरण 34.9, जहां मूसा पर जो सक्षम आत्मा थी, उसे यहोशू पर डाला गया है, और मूसा को दैवीय रूप से विशेषाधिकार प्राप्त है। वह पुराने नियम में येपेथ से निकटता का प्रोटोटाइप है। पूरे पुराने नियम में किसी अन्य व्यक्ति का परमेश्वर के साथ उतना घनिष्ठ संबंध नहीं है जितना मूसा का है।

हम इस बारे में घंटों-घंटों तक बात कर सकते थे। मूसा प्रोटोटाइप है, न केवल एक राजा के लिए, बल्कि कोई ईश्वर से कैसे जुड़ सकता है, आमने-सामने, व्यक्ति से व्यक्ति, उपस्थिति से उपस्थिति। यह सब इस बात पर प्रकाश डालता है कि ईश्वर से संबंध रखने और एक राजा होने के लिए मूसा कितना महत्वपूर्ण है।

इसलिए, मैंने आपको वहां चार बिंदु दिए, जो सुझाव देते हैं कि मूसा एक केंद्रीय नेता का सर्वोच्च उदाहरण है। मैं इसमें दूसरे बिंदु पर जाता हूँ, मूसा, इज़राइल का पहला राजा, पाठ्य साक्ष्य और गूँज। अब, आपको इसका एक अच्छा कैमरा शॉट मिल रहा है, इसलिए भले ही यह आपके पाठ्यक्रम दस्तावेज़ में नहीं है, आपको इसे अपने नोट्स में पुनः प्राप्त करने में सक्षम होना चाहिए, ताकि आप सैद्धांतिक रूप से किसी भी समय वीडियो को रोक सकें और इन्हें लिख सकें नीचे।

यह अच्छी तरह से ज्ञात नहीं है, लेकिन मूसा के पास सक्षम एजेंसियों में से एक छड़ी है। और यह बेहतर ज्ञात है कि इस छड़ी का उपयोग कई चमत्कारों को पूरा करने के लिए किया जाता है। तो, मूसा की छड़ी वास्तव में एक शाही राजदंड है और फिरौन के राजदंड का दिव्य समकक्ष है।

दूसरे शब्दों में, मिस्र में, चरवाहे की लाठी, जो कुछ इस तरह दिखती है, लगभग एक अंग्रेजी प्रश्न चिह्न की तरह, चरवाहे की लाठी राजत्व के लिए चित्रलिपि चिह्न है। मिस्र में इस चिह्न का मतलब राजा होना था। सो जब मूसा जो चरवाहा है, उसके हाथ में राजसी लाठी है, तो परमेश्वर कहता है, वह तेरे हाथ में क्या है? यह एक स्टाफ है।

परमेश्वर ने मूसा से कहा, इसे भूमि पर फेंक दे, और यह सांप बन जाएगा। खैर, मैं मदद नहीं कर सकता लेकिन सोचता हूँ कि यह भगवान फिरौन के राजा होने के दावों का मुकाबला कर रहा है क्योंकि फिरौन अपने मुकुट पर मिस्र की शाही शक्ति के प्रतीक सांप के प्रतीक के अलावा क्या पहनता है? ठीक है, ठीक है, हम इसके बारे में लंबे समय तक बात कर सकते हैं, लेकिन हम बस कोशिश कर रहे हैं, आप जानते हैं, आप भजन 23 पढ़ते हैं, आपकी छड़ी और आपकी छड़ी, वे मुझे सांत्वना देते हैं। खैर, यह तथ्य कि परमेश्वर मूसा की लाठी के माध्यम से कार्य करता है, राजत्व की एक उल्लेखनीय पुष्टि है।

दूसरे, मूल माशाच हिब्रू बाइबिल में केवल डेविडिक राजाओं के संबंध में कहीं और पाया जाता है। मशक, जो मूसा के नाम की व्युत्पत्ति का आधार है, बाइबल के बाकी हिस्सों में जब यह राजाओं को संदर्भित करता है, तो इसका उपयोग केवल राजाओं के लिए किया जाता है। तीसरा, मूसा फिरौन के लिए ईश्वर है।

अब, हम सभी जानते हैं कि मूसा परमेश्वर नहीं था। वास्तव में, वह यह बात कहने में बहुत सावधानी बरतता, लेकिन फिरौन के लिए वह भगवान था। दूसरे शब्दों में, शाही भाषा में, मूसा, इज़राइल का चुना हुआ राजा, फिरौन के लिए ईश्वर का प्रतिनिधि था।

इसी तरह राजत्व के बारे में सोचा गया। चौथा, कानून देने वाले के रूप में मूसा - ठीक है, कानून देने वाले के रूप में राजा से अधिक सामान्य शाही रूपक शायद ही कोई हो। इसलिए, कानून देने वाले के रूप में मूसा पर हमारा जबरदस्त जोर एक शाही घटना है।

पाठ को उद्धृत करने के लिए व्यवस्थाविवरण 33:4-5 में येशुरिम में मूसा को संभवतः राजा कहा गया है, जो संभवतः यरूशलेम है। इसलिए, मूसा को राजा माने जाने की आम आलोचनाओं में से एक यह है कि उसे कभी राजा नहीं कहा गया। ठीक है, यदि व्यवस्थाविवरण 33 में किसी को

राजा कहा गया था, और वह या तो प्रभु है या मूसा, तो मुझे लगता है कि यह कहना बेहतर विकल्प होगा कि मूसा को वहां राजा कहा गया था।

छठा, याशर मूल का उपयोग मूसा द्वारा किया जाता है, और इसके कई शाही समकक्ष हैं। जब हर कोई वही करता है जो उसकी नज़र में सही है, तो यही याशर की जड़ है। तो, ध्यान दें कि मूल याशर और मेशारिम के बीच एक संबंध है, जो रिलीज के लिए शब्द है, रिलीज के लिए शब्दों में से एक है।

खैर, जल्दबाजी के लिए मुझे क्षमा करें, लेकिन आप इन बिंदुओं को समझ सकते हैं और फिर उनका स्वयं अध्ययन कर सकते हैं। मेरे पास उनमें से कई यहाँ सूचीबद्ध हैं। संख्या 11-12 में, मूसा को आदेश दिया गया है कि उन्हें अपनी गोद में ऐसे ले जाओ जैसे एक दूध पिलाने वाला पिता अपने दूध पीते बच्चे को ले जाता है।

विश्वास करें या न करें, दूध पीते बच्चे की तरह उन्हें गोद में लेना बिल्कुल वैसा ही है जैसा कि हममुराबी ने अपने उपसंहार में कहा था, एक कानून संहिता में, जो निश्चित रूप से, यहां दिखाई देने वाला संदर्भ है। आठवां, मूसा की सर्वोच्च नम्रता। अधिकांश समय, जब इसका प्रचार मंच पर किया जाता है, तो हमेशा ऐसा चित्रित किया जाता है मानो मूसा शाही नहीं है।

वास्तव में, जब आप नम्र शब्द का अध्ययन करते हैं, तो यह एक विशिष्ट शाही शब्द है, न केवल बाइबल में बल्कि पूरे प्राचीन निकट पूर्व में। नम्र राजा की इस शक्तिशाली छवि की पूरी व्याख्या के लिए, मेरा सुझाव है कि आप नम्र राजा यीशु पर गुड के कार्य को देखें, और मसीहाई भजन, भजन 45, और जकर्याह 9 :9 भी देखें। तो, हम आपको जो प्रस्ताव दे रहे हैं वह वह नम्र है, जो उल्टा लगता है, जैसे कि यह कोई शाही शब्द नहीं है, वास्तव में एक प्रसिद्ध शाही शब्द है, न केवल बाइबल में, बल्कि पूरे प्राचीन निकट पूर्व में। नौवां, नौकर.

हमने आपको पहले बताया था कि दास वास्तव में एक शाही शब्द है; यह एक शाही उपाधि है। दर्जनों प्राचीन निकट पूर्वी राजाओं ने इस शब्द का प्रयोग किया, मैं फलां देवता का दास हूं। मूसा को मेरे वफ़ादार सेवक के रूप में चित्रित किया गया है।

दस, मूसा वाचा देने में शाही प्रतिनिधित्व है, एक शाही घटना जिसमें राजा संधियों में देवताओं को प्रस्तुत करता है और संधियों में देवताओं का प्रतिनिधित्व करता है। यह भी ध्यान दें कि इस्राएल को उसकी प्रजा कहा जाता है, और वह उन्हें मिस्र से बाहर ले जाता है। शब्दावली उन्हें मिस्र से बाहर ले जाती है, मित्रो; यह चरवाहा शब्दावली है, और यह शाही है।

वह एक चरवाहे के रूप में कार्य करता है, जो उन्हें मिस्र से बाहर ले जाता है। तो, संख्या 11 में, मूसा ने यहोशू में अपने उत्तराधिकारियों को नियुक्त किया। वह एक आदमी को बाहर जाने और आने के लिए नियुक्त करता है, जो चरवाहा के लिए शाही भाषा है।

दूसरी बात यह है कि इस्राएल उन भेड़ों के समान नहीं होगा जिनका कोई चरवाहा नहीं; वह शाही भाषा है। मूसा पर जो आत्मा थी उसे प्राप्त करके यहोशू राजत्व के लिए तैयार हो गया। दूसरे शब्दों में, जोशुआ को नेतृत्व हस्तांतरित करने में मूसा केंद्रीय है।

मूसा ने अपना सम्मान गिनती 27:20 में रखा है; जब हम कहते हैं कि मूसा ने उसका सम्मान किया, तो यह हिब्रू शब्द होड है, और यह शब्द हमेशा ठीक होता है; यह एक मजबूत बयान है. हिब्रू बाइबिल में हर दूसरे स्थान पर, होड एक शाही शब्द है, और यह यहाँ है। वह अपना पद, अपना शाही सम्मान, यहोशू पर डालता है।

मूसा मेरे सारे घराने में विश्वासयोग्य है। यह एक शाही उपाधि है. शायद मूसा का चमकता चेहरा रायल्टी का संकेत है क्योंकि आप लिपिट इश्तर के पास जाते हैं, और वह चमकदार चेहरे वाला नायक है। मेरा मतलब है, मैं बस आगे बढ़ता रह सकता हूँ।

इसके अलावा, शब्दावली का एक समूह था जो शाही है लेकिन बिना किसी सूचना के चला जाता है, अर्थात्, शब्द जैसे उसने नेतृत्व किया, उसने खिलाया, उसने चरवाहा किया, उसने चरवाहा किया, और दर्जनों शब्द जो मान्यता प्राप्त नहीं हैं। तो, हम आपको जो सुझाव दे रहे हैं वह यह है कि इस बात के कई सबूत हैं कि मूसा शाही था। इसे अधिक स्पष्ट शाही शब्दावली में न बताए जाने का एक कारण यह है कि दैवीय योजना मूल रूप से मूसा के लिए उन्हें वादा किए गए देश में ले जाने के लिए थी और जब मूसा उन्हें वादा किए गए देश में ले जाएगा, तो उनके पास यरूशलेम उनका शाही शहर होगा, और तब मूसा एक शाही राजधानी के साथ इस्राएल का राजा होगा और सिंहासन पर बैठेगा।

इसलिए, मुझे लगता है कि शुरुआत से ही इसराइल के लिए परमेश्वर की योजना थी कि वाचा में राजसत्ता केंद्रीय कारक होगी। अब, पुराने नियम के किसी भी अन्य राजा के विपरीत, मूसा की असफलताएँ कहीं अधिक मानवीय हैं, और राजा के रूप में मूसा इतना सफल था कि ईश्वर उसे एक उच्च मानक पर रखता है। इसलिए, मूसा को बस एक बार अपनी छड़ी का दुरुपयोग करना होगा, और वह वादा किए गए देश में जाने से अयोग्य हो जाएगा।

वह चट्टान पर एक बार प्रहार करने के बजाय, उस पर दो बार प्रहार करता है। मुझे लगता है कि एक मामला बनाया जा सकता है, एक तर्क दिया जा सकता है, कि छड़ी राजत्व का प्रतीक है, और छड़ी का दुरुपयोग करके, भगवान यह मुद्दा बना रहे हैं कि मूसा को एक उपदेश के रूप में भूमि में आने की अनुमति नहीं है बाद के सभी राजाओं से कहा कि जब तुम राजत्व का उल्लंघन करोगे तो अयोग्य हो जाओगे। मुझे यकीन है कि जब हम उस जानकारी से गुजर रहे थे तो आपकी आंखें बता सकती थीं कि ये विचार प्राचीन निकट पूर्व में राजत्व की अवधारणा से जुड़े हुए हैं।

शाही उदाहरणों पर जाकर, इसलिए, यदि हमने हजारों की संख्या हजारों में ली, तो मैंने आपको केवल एक या दो उदाहरण दिए। यदि मैं अपना जीवन प्राचीन निकट पूर्व से, प्राचीन निकट पूर्व और बाइबिल में राजत्व से संबंधित सभी उदाहरणों को निकालने में समर्पित करता, तो मुझे हजारों और हजारों की आवश्यकता होती। मैंने आपको बस एक बहुत ही छोटी संख्या दी है।

तो, मेरा आपके लिए प्रस्ताव यह है कि राजत्व महत्वपूर्ण है क्योंकि भगवान ने इसका वादा किया था। राजत्व महत्वपूर्ण है क्योंकि ईश्वर दिखा सकता है कि मानव नेता नियमित रूप से असफल

होते हैं, यहां तक कि उनमें से सबसे बड़े भी, जैसे कि मूसा के मामले में, लेकिन ईश्वर उन सभी का उपयोग आपको यह दिखाने के लिए कर सकता है कि इब्राहीम से किया गया वादा मूसा में नहीं बल्कि पूरा हुआ है। मसीहा में, क्राइस्ट में। तो, मेरे सोचने के तरीके के अनुसार, राजत्व की यह पूरी अवधारणा हिब्रू कथा के सबसे गायब मूलभूत संयोजकों में से एक है।

यह एकमात्र धर्मशास्त्र नहीं है जो संपूर्ण कथा में अपना स्थान बनाता है, बल्कि यह धर्मशास्त्रीय रूप से सबसे महत्वपूर्ण में से एक है। मैं आपके सामने यह प्रस्ताव रखूंगा कि मुझे लगता है कि राजत्व वास्तव में ईश्वर के अस्तित्व के लिए सबसे महत्वपूर्ण रहस्योद्घाटन रूपक है। तो यह हमारा प्रस्ताव है क्योंकि हम आपको 1 शमूएल 8 में सन्निहित राजत्व के बारे में यह जानकारी प्रस्तुत करते हैं। आप जानते हैं, यह सब मुझे बहुत सरल लगता है, लेकिन यह मुझे जीवन के बारे में उन चीजों में से एक की याद दिलाता है जो मुझे आश्चर्यचकित करती है।

मुझे लगता है कि मैं प्रेरक और पूरी तरह से स्पष्ट हो रहा हूं, केवल यह पता लगाने के लिए कि मेरी दुनिया मेरी महानता को पहचानने में विफल रही है। इसलिए, मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि मैं जो प्रस्ताव रख रहा हूं उस पर व्यक्तियों के बीच असहमति होगी। इसलिए, मैं आपको केवल सबूतों को देखने, इसके बारे में सोचने और यह महसूस करने के लिए आमंत्रित कर सकता हूं कि सिर्फ इसलिए कि आपने इस पर उपदेश सुना है इसका मतलब यह नहीं है कि उपदेश सही हैं।

मेरा दृष्टिकोण यह है कि मुझे लगता है कि काफी कुछ है। मैं प्राचीन निकट पूर्वी सामग्री को किसी इमारत की नींव के रूप में नहीं सोचता। मैं इसे प्राचीन निकट पूर्वी सामग्री के टॉर्च की तरह होने के संदर्भ में अधिक सोचता हूं। यह तुलनाएँ नहीं बनाता; यह हमें वहां मौजूद तुलनाओं को देखने में सक्षम बनाता है।

आप बाइबिल पाठ पर प्रकाश डाल रहे हैं, लेकिन आप इसकी नींव नहीं दे रहे हैं। बाइबिल पाठ की नींव स्पष्ट रूप से स्वयं ईश्वर के बारे में रहस्योद्घाटन है। यह सब कहने के बाद, मैं अपने क्लास नोट्स पर लौटने के लिए तैयार हूं।

यहीं पर हम उन सात बिंदुओं पर रुके जो सभी सुलैमान की विफलताओं को दर्शाते हैं। सुलैमान का शासनकाल विफल होने के साथ, इज़राइल उस स्थिति में लौट आया जिसमें वह न्यायाधीशों की पुस्तक में था - एक ऐसा राज्य जो मूल रूप से आदिवासीवाद द्वारा शासित था। दस जनजातियाँ दो जनजातियों से ईर्ष्या करती हैं।

दो जनजातियाँ हैं यहूदा और बिन्यामीन की छोटी जनजाति, जिसने बड़े पैमाने पर बिन्यामीन के क्षेत्र को निगल लिया है। तो, आपके पास आदिवासी ईर्ष्या है, जैसा कि हमने न्यायाधीशों की पुस्तक में किया था, जिसके परिणामस्वरूप विभाजन होता है। और इसलिए, सुलैमान की मृत्यु और रहूबियाम के उदय के बाद हमारे पास जो कुछ है वह आदिवासीवाद की वापसी है, और यह एक ऐसी समस्या है जिस पर पुराने नियम की कहानी में वास्तव में कभी भी विजय प्राप्त नहीं की गई है या महारत हासिल नहीं की गई है।

तो, हमारे पास विभाजित राजतंत्र की अवधि है, जो सुलैमान की मृत्यु और विभाजित इज़राइल की वापसी के साथ शुरू होती है। निःसंदेह, रहूबियाम के बारे में वह कहानी हम सभी जानते हैं। वे रहूबियाम के पास आते हैं और उसे एक प्रस्ताव देते हैं जिसे वह अस्वीकार कर सकता है, और इसलिए वह उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर देता है, और ठीक उसी तरह, एक राज्य अब दो हो गया है।

तो, इस अवधि के दौरान मुख्य शत्रु, निस्संदेह, असीरिया था। इसे आरंभ में ही एक ऐसे शत्रु के रूप में पहचान लिया गया था जिससे डरना चाहिए, जैसा कि ओमरी राजवंश की नीतियों से पता चलता है। ओम्री अहाब के पिता थे, और उन्होंने उत्तर में सबसे बड़ा राजवंश बनाया। अहाब और उसके अनुयायियों ने पहले ही पहचान लिया था कि असीरिया एक ऐसी शक्ति है जिससे डरना चाहिए।

मिस्र ने भूमिका निभाना जारी रखा, लेकिन मिस्र कभी भी अति-शक्ति नहीं रहा; यह कभी भी महाशक्ति नहीं थी; सी पीपुल्स मूवमेंट के बाद यह सिर्फ एक पड़ोसी शक्ति थी। उत्तरी साम्राज्य के पतन के बाद, असीरियन साम्राज्य का पतन हो गया और पश्चिम में इसकी जगह नव-बेबीलोनियन साम्राज्य ने ले ली, और यह बाद वाला राष्ट्र था जिसने राजशाही की अवधि को समाप्त कर दिया। तो चलिए मैं एक क्षण रुकता हूँ और आपको असीरिया का नक्शा दिखाता हूँ।

यह एक दिलचस्प नक्शा है क्योंकि यह हमें दुनिया का पहला दिखाता है, मैं शब्द का उपयोग करने जा रहा हूँ, पहला, पहला, पहला पद, हाइपर-पावर। आप देखते हैं, सरगोन का राज्य, या उर III का राज्य, एक महान राज्य था, लेकिन मेरे कर्सर का अनुसरण करें, या इससे भी बेहतर, मुझे अपना मार्कर लेने दें, जो राज्य पहले थे वे राज्य थे जिन्होंने इस मेसोपोटामिया बेसिन पर शासन किया था। यह उतना ही महान है जितना वे थे।

यह दुनिया की पहली अति-शक्ति है क्योंकि, जैसा कि आप देख सकते हैं, यह पूरी तरह से फर्टाइल क्रीसेंट पर, पूरे फर्टाइल क्रीसेंट पर और बहुत कुछ पर शासन करती है। यह अनातोलिया तक शासन करता है, लगभग अनातोलिया का आधा भाग, और जैसा कि आप देख सकते हैं, यह पूरे मिस्र पर शासन करता है, और यह पूर्व में, ईरान के ऐतिहासिक पड़ोसी क्षेत्र पर शासन करता है। असीरिया न केवल फर्टाइल क्रीसेंट पर शासन करने वाला पहला साम्राज्य है, बल्कि यह दुनिया की पहली महाशक्ति है।

इसके बाद कोई दूसरी अति-शक्ति नहीं आएगी। जैसा कि आप देख सकते हैं, नियो-बेबीलोनियन के मामले में, पहला नियो-बेबीलोनियन साम्राज्य, जिसे आपके लिए बैंगनी रंग में चित्रित किया गया है, यह उसके बाद का साम्राज्य है। यह प्रसिद्ध नबूकदनेस्सर का साम्राज्य है।

यह साम्राज्य बहुत छोटा था। इसने बहुत ही कम समय के अलावा एलीम पर शासन नहीं किया, और भले ही यह नक्शा, जो मूडी बाइबिल एटलस से आता है, यह नक्शा, जैसा कि आप देख सकते हैं, यह मिस्र पर शासन कर रहा है। इसने वास्तव में मिस्र पर शासन नहीं किया।

इसलिए, यदि आप बेबीलोनियन साम्राज्य की वास्तविक सीमाएँ चाहते हैं, तो नव-बेबीलोनियन साम्राज्य, क्योंकि नव-बेबीलोनियन साम्राज्य पुराने बेबीलोनियन साम्राज्य का उत्तराधिकारी है, सिवाय इसके कि उन्हें अलग करने में एक हजार वर्ष हैं। पुराना बेबीलोन साम्राज्य हम्मूराबी का था। नव-बेबीलोनियन साम्राज्य नबूकदनेस्सर द्वारा बनाया गया है।

तो, वास्तविक नव-बेबीलोनियन साम्राज्य ने फर्टाइल क्रीसेंट पर शासन किया, लेकिन उसने बस इतना ही शासन किया, फर्टाइल क्रीसेंट। तो, यह कोई अति-शक्ति नहीं थी। लेकिन जैसा कि हम देखते हैं कि आगे क्या होने वाला है, फारस सबसे बड़ी अति-शक्तियों में से एक था।

यह मानचित्र, जो कि नहीं है, एक प्रकार से असंगत है क्योंकि यह जो है उससे छोटा दिखता है। यदि आप मेरे साथ देख सकें तो यह भारत है। फ़ारसी साम्राज्य ने, अपने सबसे बड़े रूप में, पूरे भारत पर शासन किया।

इसने यहां शासन किया जिसे हम पाकिस्तान कहते हैं। इसने यहां फ़ारसी साम्राज्य पर शासन किया। इसने काकेशस के पर्वतीय क्षेत्रों तक, जिसे हम रूस कहते हैं, तक शासन किया।

इसने ट्रेका तक, जो कि आधुनिक रोमानिया और बुल्गारिया है, शासन किया। इसने अरब सागर तक, मिस्र तक और लीबिया तक पूरे रास्ते शासन किया। अपने सबसे बड़े रूप में, यह किसी भी साम्राज्य का सबसे बड़ा भूभाग था।

इस अभूतपूर्व भूभाग ने संभवतः रोमन साम्राज्य जितने मनुष्यों पर शासन नहीं किया, लेकिन इसने एक बड़े भूभाग पर शासन किया। यह समस्त प्राचीन काल का सबसे बड़ा साम्राज्य था। ब्रिटिश साम्राज्य के अस्तित्व में आने तक इससे बड़ा कोई साम्राज्य नहीं था।

फ़ारसी साम्राज्य एक अति-शक्तिशाली था। फिर, निस्संदेह, फारसियों का अगला साम्राज्य था, और वह सिकंदर महान का साम्राज्य था। हम वास्तव में सिकंदर महान के बारे में बात नहीं करना चाहते कि उसकी मृत्यु के सामान्य कारण के लिए वह अति-शक्तिशाली था।

जैसे ही उसने इस पर विजय प्राप्त की, उसकी मृत्यु हो गई। उन्होंने इसे कभी भी एक साथ नहीं रखा। वस्तुतः, जिस वर्ष उनकी मृत्यु हुई, वह चीज़ कई राजनीतिक संस्थाओं में विभाजित हो गई।

जैसा कि आप देख सकते हैं, सिकंदर का तथाकथित साम्राज्य, इसने फारसियों के साम्राज्य का स्थान ले लिया, सिवाय इसके कि इसने यहां मैसेडोनिया और हेलस को जोड़ दिया। यह वास्तव में एक सच्चा साम्राज्य नहीं था। जैसे-जैसे हम इस सबके माध्यम से आगे बढ़ रहे हैं, हम आपको उत्तराधिकारी साम्राज्यों के बारे में दिखाने का प्रयास कर रहे हैं।

यह इतिहास का अंतिम साम्राज्य, रोमन साम्राज्य है। जैसा कि आप देख सकते हैं, यह अति-शक्तियों में से अंतिम थी।

इसने संपूर्ण भूमध्य सागर के चारों ओर एक घेरा बनाकर शासन किया। जैसा कि आप बता सकते हैं, यह एक विशाल साम्राज्य भी था, संभवतः पूरे प्राचीन इतिहास के किसी भी साम्राज्य की

तुलना में अधिक मनुष्यों पर शासन करता था। जैसा कि हमने इनका अध्ययन कर लिया है, मैं आपको बता दूँ, मूडी बाइबिल एटलस खरीदें।

बहुत सारे अच्छे हैं. जॉर्डरवन के पास एक अच्छा बाइबिल एटलस है। कार्टा, कार्टा, कार्टा बाइबिल एटलस।

अपने लिए एक अच्छा बाइबिल एटलस खरीदें। मेरा मानना है कि प्रत्येक बाइबल विद्यार्थी को इसकी आवश्यकता है। मूडी बाइबिल एटलस के इन अद्भुत मानचित्रों के साथ, मैं आपको यह दिखाने में सक्षम हूँ कि अति-शक्तियों में से पहली असीरिया है।

हम वहीं जा रहे हैं. भगवान इसका उपयोग करेंगे, जैसा कि हम देखते हैं कि हम इतिहास को अपनी आंखों के सामने कैसे प्रकट होते देखते हैं, भगवान इन अति-शक्तियों का उपयोग उस चीज़ को आगे बढ़ाने के लिए करेगा जिसे मैं कहूँगा कि यह पूरी दुनिया के लिए दिव्य योजना है। उत्पत्ति 12 में ही, ईश्वर ने प्रकट किया कि वह पूरी दुनिया का ईश्वर है और इब्राहीम को पूरी दुनिया के लिए एक आशीर्वाद बनना है।

जिस तरह से इस्राएली उसके बारे में सोचते थे, उसके विपरीत, परमेश्वर सभी राष्ट्रों का परमेश्वर था। परमेश्वर सारे संसार का परमेश्वर था। उस संपूर्ण विश्व परिघटना का एक हिस्सा प्रथम विश्व महाशक्ति का उदय है।

निःसंदेह, यदि मैं थोड़ा रुककर हंस सकूँ, तो इस साम्राज्य के आकार को देखूँ, जो संभवतः 1,500 से 2,000 मील तक फैला हुआ है। विशाल। फिर इजराइल को देखो.

लेज़र का रंग देखें. यहाँ इजराइल है. वह छोटा 100-मील बिंदु देखें? वह इजराइल है.

2,000 मील बिजली. यह निराशाजनक लग रहा है, है ना? भगवान इस 100-मील की छोटी इकाई के माध्यम से इतनी विशाल सैन्य और राजनीतिक इकाई से कैसे संबंधित हो सकते हैं? जैसा कि ओलंपिक में कहा जाता है, खेल शुरू होने दीजिए। यह हर समय एक सुंदर कहानी नहीं है, लेकिन यह एक ऐसी कहानी है कि यदि आप बाइबिल को एक दिव्य पुस्तक के रूप में मानते हैं, तो यह एक ऐसी कहानी है जो बताती है कि कैसे भगवान ने पूरे विश्व को बदलने के लिए एक बहुत छोटे क्षेत्र में लोगों का उपयोग किया।

सौ मील. मैं यहाँ लिंगबर्ग, वर्जीनिया में रहता हूँ। लिंगबर्ग, वर्जीनिया से, लिंगबर्ग में चार्लोट्सविले से, जो वर्जीनिया विश्वविद्यालय का स्थान है, 29 दक्षिण की ओर जाएं, लिंगबर्ग पहुंचें, अल्टा विस्टा तक 15 मील और जाएं, और यहां लिंगबर्ग में हमारे पास इजराइल के आकार की एक तस्वीर है, चार्लोट्सविले से अल्टा विस्टा तक फैला हुआ।

ज़मीन का इतना छोटा सा टुकड़ा एक ऐसी कहानी का समर्थन कैसे कर सकता है जो पूरी दुनिया को बदल देगी? खैर, ऐसा इसलिए है क्योंकि भगवान पूरी दुनिया का भगवान है। आइए याद रखें कि यह आज भी उतना ही सच है जितना तब था, भले ही हम हमेशा यह पता नहीं लगा सकें कि

कहानी कैसे सामने आ रही है। असीरिया एक अतिशक्तिशाली कैसे बन गया? मेरे चार सुझाव हैं: आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, जातीय और भौगोलिक।

इनमें से पहले को मैं आर्थिक विचार कहता हूँ। यदि हम अपने मानचित्र पर वापस जाएं और उसे देखें, तो प्राचीन असीरिया का हृदय यहीं इस छोटे से खंड में है। प्राचीन काल में इसे सुबारतू कहा जाता था, लेकिन आज इसे असीरिया कहा जाता है।

इस छोटे से खंड में, हमारे पास एक ऐसा क्षेत्र है जहां अर्थशास्त्र ने इस महान महाशक्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आप जानते हैं, एक तरीका है जिससे हम शायद इसके बारे में सोच सकते हैं। असीरिया एक ऐसा क्षेत्र था जिसके पास आबादी को सहारा देने के लिए पर्याप्त अच्छी कृषि भूमि थी जो इतनी बड़ी थी कि उसे मौका मिल सकता था, और फिर उन्हें एक साथ रखा जाए और बिल्कुल सही परिस्थितियाँ उत्पन्न हों, और यह छोटा क्षेत्र बड़े क्षेत्रों से भी बड़ा हो सकता है।

तो, दक्षिण में, हमने जो देखा है वह यह है कि मिट्टी की उर्वरता के धीरे-धीरे कम होने के कारण, शहरों और शहर-राज्यों के पतन के कारण, जो वहां मौजूद थे, प्राचीन अर्थव्यवस्थाएं कमजोर हो गई हैं, इसलिए जैसे यहां की अर्थव्यवस्थाओं में गिरावट शुरू हो गई, जिससे अशूरियों को अपनी अर्थव्यवस्था को एक भूमिका निभाने का मौका मिल गया। और असीरिया की अर्थव्यवस्था में कुछ फायदे थे जो यहां सुमेर और अक्कड़ की अर्थव्यवस्थाओं में नहीं थे। वे फायदे क्या होंगे? खैर, असीरिया के उदय के साथ, हम लौह युग में हैं, और लौह युग में असीरिया के पास जो लाभ था वह यह था कि वह लोहे के भंडार का तत्काल पड़ोसी था जो यहां पाए गए थे जिसे हम तुर्की कहते हैं। समय के साथ हम इसे अनातोलिया ही कहेंगे।

एक, असीरिया लौह भंडार के नजदीक है, जो कुछ मायने रखता है, खासकर जब उन्हें रोकने के लिए अनातोलियन साम्राज्य नहीं रह गया है। दूसरे, असीरिया लकड़ी के नजदीक है जो अनातोलिया और ज़ाग्रेस दोनों से प्राप्त की जा सकती है, इसलिए लकड़ी और धातु से निकटता के कारण असीरिया क्षेत्र की अन्य राजनीतिक संस्थाओं की तुलना में थोड़ी बेहतर स्थिति में है। अब, निःसंदेह, इसमें वे महान अन्न भंडार-उत्पादन गुण नहीं हैं जो हमारे पास दक्षिण में हैं, लेकिन फिर दक्षिण में क्या हुआ है कि दक्षिण और मध्य खंडों ने अपने अन्न भंडार-उत्पादक गुणों की एक निश्चित मात्रा खो दी है।

आर्थिक विचारों से हमारा तात्पर्य यही है। असीरिया साम्राज्य के स्रोतों, साम्राज्य की अनिवार्यताओं के करीब है, इसलिए यह हमारा पहला बिंदु था। दूसरा बिंदु वह है जिसे मैं मनोवैज्ञानिक विचार कहता हूँ।

जब मैं मनोविज्ञान शब्द का उपयोग करता हूँ तो मुझे हमेशा अपना मजाक उड़ाना पड़ता है क्योंकि मैं मनोविज्ञान के बारे में वस्तुतः कुछ भी नहीं जानता हूँ। पेग और मैं एक बाइबिल कॉलेज में गए, और हमारे पास एक शिक्षक थे जिन्होंने हमें मनोविज्ञान पाठ्यक्रम पढ़ाया। उस मनोविज्ञान पाठ्यक्रम के बारे में जो बात मुझे बहुत अच्छी तरह से याद है वह यह है कि मैंने मनोविज्ञान के बारे में एक भी चीज़ नहीं सीखी, लेकिन मुझे पता चला कि यह एक महिला थी जो

वास्तव में पुरुषों से नफरत करती थी। तो, मैं मनोविज्ञान के बारे में कुछ नहीं जानता। शायद मुझे कोई दूसरा शब्द खोजना चाहिए था।

जब मैं मनोविज्ञान कहता हूँ, तो शायद मैं विश्वदृष्टि शब्द का उपयोग कर सकता था। अशूरियों के बारे में एक बात हम देख सकते हैं कि उनके सभी प्रमुख देवता युद्ध देवता थे। शुरुआत से ही, यह स्पष्ट है कि असीरिया ने युद्धप्रियता पर जोर दिया जो उसके पड़ोसियों से अलग था।

दूसरे शब्दों में, उनके सभी प्रमुख देवता युद्ध देवता हैं, जो मेसोपोटामिया से भिन्न है। और दूसरी बात, उनके पास यह अनोखी तस्वीर है जो हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि अशूरियों के लिए युद्ध एक धर्म का कार्य था। अगर मेरे पास समय हो तो मैं आपको तस्वीरें दिखा सकता हूँ, बेशक, समय की कमी एक समस्या है, लेकिन मैं आपकी तस्वीरें दिखा सकता हूँ जिसमें आप सैन्य पोशाक में एक असीरियन राजा को इस तरह से धनुष खींचे हुए देख सकते हैं। उसके पीछे पूर्ण छाया में युद्ध देवता है।

और इसलिए, उनके सोचने के तरीके में, असीरिया दिए गए देवताओं की ओर से युद्ध करने के लिए भगवान की पसंद जैसा था। दूसरे शब्दों में, यह एक उभरती हुई अलग अवधारणा प्रतीत होती है जो हमें इस निष्कर्ष पर ले जाती है कि अशूरियों के लिए युद्ध एक धर्म का कार्य था। जिसे हम पवित्र युद्ध कह सकते हैं, यह उस शुरुआती विवरण के सबसे करीब हो सकता है जिसे हम प्राप्त कर सकते हैं।

अशूरियों के लिए, युद्ध एक धर्म का कार्य था, और एक राजा की धार्मिक निष्ठा यह पूछकर मापी जाती है कि आपने कितने अभियान चलाए। यदि कोई राजा हर वर्ष युद्ध करने जाता था, तो वह धार्मिक रूप से पवित्र राजा था। तो, इस बिंदु पर, हम केवल यह कह रहे हैं कि अशूरियों का युद्ध पर एक अनूठा दृष्टिकोण था। उनके लिए, युद्ध एक धार्मिक कार्य था, और इसने उन्हें उन तरीकों से जीतने के लिए प्रेरित किया जो मुझे लगता है कि इस बिंदु तक उनसे पहले की किसी भी चीज़ से कुछ अलग थे।

तीसरा, मैं आपका ध्यान उस ओर आकर्षित करता हूँ जिसे मैं जातीय कारक कहता हूँ। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि असीरिया ऐसे लोगों से घिरा हुआ है जो धार्मिक नहीं हैं। वे राजनीतिक संस्थाएं हैं जो इस राजनीतिक वास्तविकता की ओर ले जाती हैं।

या तो उन पर विजय प्राप्त करो, या वे तुम पर विजय प्राप्त कर लेंगे। अब, दोस्तों, दक्षिण की ऐतिहासिक राजनीतिक इकाई हमेशा सुमेर और अक्कड़ के महान लोग रहे हैं। खैर, अब तक, सुमेर चला गया है, लेकिन असीरिया के दक्षिण में एक स्थायी जनशक्ति है जो हमेशा खंजर की तरह नुकीली रहती है।

द्वितीय विश्व युद्ध में चर्चिल से एक शब्द चुनने के लिए, यह असीरिया के पेट पर एक स्थायी खंजर की तरह इंगित किया गया है। तो, वह अंडरबेली क्या होगी? यह बेबीलोन है। बाद के पूरे इतिहास में, बेबीलोन असीरिया का प्रतिद्वंद्वी बना रहा।

असीरिया बेबीलोन को एक तरह से चचेरा भाई मानता था। खैर, बेबीलोनवासी स्वयं को चचेरे भाई-बहन नहीं मानते थे। वे अश्शूरियों से घृणा करते थे।

वे चाहते थे कि बेबीलोन अश्शूर पर शासन करे। तो, दक्षिण की ओर, आपने असीरिया के निचले हिस्से पर चाकू तान दिया है, जिसे चर्चिल ने बाल्कन अभियान कहा था; वह हमेशा फ्रांस से नहीं बल्कि बाल्कन से जर्मनी पर आक्रमण करना चाहता था। खैर दूसरी बात, उन्हें जातीय कारक का सामना करना पड़ा कि उनके तत्काल पश्चिम में, उनके पास असीरिया के अस्तित्व के लिए एक और जातीय खतरा था, और वह अरामिया की घृणित इकाई का खतरा था।

आप देखिए, असीरिया के उदय के साथ, पश्चिम में इन अरामी राज्यों का भी उदय हुआ है, और जैसे असीरिया अपने प्रभाव का विस्तार करना चाहता है, वैसे ही अरामी लोग पूर्व की ओर विस्तार करना चाह रहे हैं। असीरिया या तो अरामियों द्वारा जीत लिया जाएगा, या असीरिया अरामियों पर विजय प्राप्त कर लेगा। अब इसका परिणाम यह हुआ कि असीरिया ने पहचान लिया कि उसे दक्षिण और पश्चिम में युद्ध करना होगा।

तो जातीय कारकों के बारे में मेरा यही मतलब है। असीरिया के लंबे इतिहास से उनके लिए यह बिल्कुल स्पष्ट था कि या तो असीरिया ने उन पर विजय प्राप्त कर ली थी या वे असीरिया को जीतने जा रहे थे। ये जातीय कारक हैं।

असीरिया के उदय के बारे में मैंने जिन चार कारकों का उल्लेख किया उनमें से अंतिम को मैंने भौगोलिक कारक कहा। हम इसे समझाएंगे, और फिर हम संभवतः इस विशेष वीडियो को बंद कर देंगे और अपने अगले वीडियो पर जाएंगे। भौगोलिक कारक यह है।

दक्षिण में सुमेर और केंद्र में अक्कड़ के विपरीत, असीरिया मेसोपोटामिया बेसिन के उत्तरी छोर पर स्थित है। जो बात कम दिखाई देती है वह यह है कि यहाँ काकेशस में यह भूमि पुल, वह भूमि पुल था जिसके माध्यम से प्रवासी लोग या तो अनातोलिया या उपजाऊ वर्धमान में या कभी-कभी यहाँ नीचे अपना रास्ता बनाने के लिए चले जाते थे। इज़राइल भौगोलिक रूप से उजागर हो गया था।

जब वे समूह प्रवासित हुए, तो एक बार जब वे यहां पूर्वी खंड के पहाड़ी क्षेत्रों से आगे निकल गए, तो असीरिया को पहला झटका लगा। असीरिया भौगोलिक दृष्टि से उजागर था। वास्तव में, ऐसी भावना है कि राजनीतिक संस्थाएँ भौगोलिक नुकसान की संभावनाओं से शायद ही कभी सुरक्षित रहती हैं।

वे उत्तर की ओर उजागर हुए। जैसा कि मैंने आपको बताया था, वे पश्चिम से उजागर हुए थे। वे दक्षिण से उजागर हुए थे।

तो असीरिया के भूगोल के बारे में मेरा कहना यह है कि असीरिया के भूगोल के बारे में ऐसा कुछ भी नहीं है जो असीरिया को सुरक्षित बनाता हो। अब, आप सोच सकते हैं कि इससे असीरिया कमजोर हो जाएगा, लेकिन अगर इसे ठीक से संभाला जाए, तो वास्तविकता यह है कि सुरक्षित सीमाओं की कमी का मतलब है कि असीरिया की राजनीतिक इकाई सुरक्षित होने के लिए अपनी

सीमाओं का विस्तार करेगी। दूसरे शब्दों में, असीरिया की ऐतिहासिक राजनीतिक इकाई को सुरक्षित रखने के लिए, उसे चारों दिशाओं, दक्षिण और उत्तर, पूर्व और पश्चिम में विजय प्राप्त करनी होगी, ताकि असीरिया के भौगोलिक विस्तार के कारण उसे जीतना पड़े या जीतना पड़े।

इस समय हम आपको जो बात बता रहे हैं, उसमें से एक बात जो मुझे सबसे अधिक विडंबनापूर्ण लगती है, वह यह है कि असीरिया कभी भी एक महान शक्ति नहीं थी। जरूरी नहीं कि यह एक कमजोर शक्ति रही हो। 1200, 1250 और 1000 ईसा पूर्व में असीरिया, यह एक महत्वपूर्ण राजनीतिक इकाई थी, लेकिन यह कभी भी एक महान शक्ति नहीं रही थी।

सी पीपल्स मूवमेंट के बाद, असीरिया ने तत्काल कमजोरी के दौर में प्रवेश किया, और जब वह उभरा, तो उसने पूरी दुनिया को आश्चर्यचकित कर दिया। तो, इस टेप पर हमारा आखिरी विचार कुछ इस तरह होगा: वास्तव में, सी पीपल्स मूवमेंट उस निर्वात के लिए जिम्मेदार था जिसने असीरिया को उभरने और निर्वात को भरने की अनुमति दी।

इसे रोकने के लिए किसी भी महान शक्ति के बिना, असीरिया, इतिहास में पहली बार, एक महान शक्ति बन सकता है। इसलिए, जिस तरह सी पीपल्स मूवमेंट ने इज़राइल के लिए एक महत्वपूर्ण शक्ति बनने के लिए एक शून्य पैदा किया, उसी तरह इसने असीरिया के एक शक्ति बनने के लिए भी एक शून्य पैदा किया। एक हजार वर्षों में पहली बार, दक्षिण में कोई बड़ी शक्ति नहीं थी। उत्तर में कोई बड़ी शक्ति नहीं थी और मिस्र कमजोर था।

इसने बस एक निर्वात पैदा किया जिसने अगली महान शक्ति को ऑक्सीजन प्रदान की, जो संभवतः प्राचीन काल के सबसे क्रूर, शातिर, भयानक लोग होंगे। रुकने के लिए एक बुरी जगह है, लेकिन एक अच्छी जगह है क्योंकि हम असीरियन काल में प्रवेश करने वाले हैं, और ऐसा लगता है कि यह तीन शताब्दियों से अधिक का एक दुःस्वप्न काल था। असीरिया सभी मेसोपोटामिया साम्राज्यों में सबसे लंबे समय तक जीवित रहने वाले साम्राज्यों में से एक था।

तो, इसके साथ, हम आगे बढ़ेंगे और रुकेंगे और फिर इसे उठाएंगे और अपना अगला टेप शुरू करेंगे, असीरियन साम्राज्य की ऐतिहासिक सामग्री को देखेंगे क्योंकि यह बाइबिल के पाठ के साथ इंटरफेस करती है। धन्यवाद।

यह पुराने नियम की पृष्ठभूमि पर अपने शिक्षण में डॉ. डॉन फाउलर हैं। यह सत्र 17 है, प्राचीन निकट पूर्व में राजत्व।